By
Rahul Kumar Jha
Dept.of Political Science

# Lecture-1



## Topic-Political Thought of M.N. Roy on New-Humanism

Class-B.A Degree-1 (Hons.,P-2)

Subject-Political Science

Date-16 Oct.,2020

By Rahul Kumar Jha.

### एम. एन. राय के राजनीतिक विचार :-
### (Political Thought of M.N. Roy)

मानवेन्द्र नाथ राय आधुनिक भारत के अत्यंत प्रतिभाशाली राजनीति-विचारक और क्रांतिकारी थे। उनका संबंध भारतीय साम्यवादियों की पहली पीढ़ी से था। उन्होंने एक नए सिद्धांत नव-मानववाद का प्रतिपादन किया जो उनकी ख्याति का मुख्य आधार है।

राय ने नव-मानववाद की संकल्पना अपनी अनेक कृतियों के अंतर्गत प्रस्तुत की। इनमें 'न्यू ह्युमनिज्म : ए मैनीफेस्टो (1947), 'रीजन, रोमैंटीसिज्म एंड रिवोल्यूशन', 'द प्राब्लम ऑफ फ्रीडम' विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इस नव-मानववाद को 'वैज्ञानिक मानववाद' की संज्ञा भी दी गई है। इसका मूल स्वर मनुष्य की स्वतंत्रता है जो उसकी सृजनात्मक

शक्तियों के प्रयोग में निहित है।

उसके अनुसार मनुष्य स्वयं अपनी नियति का नियंता है। किसी युग में मनुष्य अपनी नियति को कैसे नियत करेगा- यह ज्ञान-विज्ञान की उन्नति पर निर्भर है। ज्ञान-विज्ञान की उन्नति की कोई सीमा नहीं है, इसलिए मनुष्य के भविष्य की कोई निश्चित व्याख्या प्रस्तुत नहीं की जा सकती। अतः नव-मानववाद स्वतंत्रता के प्रयोग की ओर अनंत संभावनाओं में आस्था रखते हुए उसे किसी ऐसी विचारधारा के साथ नहीं बांधना चाहता जो किसी पूर्वनिर्धारित लक्ष्य की सिद्धि को ही उसके जीवन का ध्येय मानती हो।

राय के अनुसार मनुष्य ही अपनी तर्कबुद्धि से समाज और नैतिकता के स्वरूप को निर्धारित करता है। अतः उसका स्थान सबसे पहले और सबसे ऊंचा है। मनुष्य स्वयं अपने जीवन और जगत का निर्माता है। कोई सामाजिक दायित्व या नैतिक सिद्धांत मनुष्य की स्वतंत्रता में कटौती नहीं कर सकता। राय का नव-मानववाद मनुष्य को संपूर्ण सृष्टि का मानदंड स्वीकार करता है।

राय के अनुसार, मनुष्य का बौद्धिक पुनर्जागरण राजनीतिक और सामाजिक पुनर्निर्माण की जरूरी शर्त है। स्वतंत्रता की क्षमता स्वयं मनुष्य में निहित है। यदि मनुष्य अपनी सृजनात्मक शक्तियों के प्रति सजग हो जाए तो वह परंपरागत धार्मिक सत्ता और अलौकिकवाद के बंधनों को काटकर आध्यात्मिक स्वतंत्रता प्राप्त कर सकता है। स्वतंत्र मनुष्य ही स्वतंत्र समाज का निर्माण कर सकते हैं।

इस प्रकार एम.एन. राय के अनुसार, व्यक्ति की तर्कशक्ति उसके ज्ञान के विस्तार के साथ जुड़ी है। राय का नव-मानववाद 'मनुष्य' को संपूर्ण सृष्टि की धुरी मानता है। राय ज्ञान के अनंत विस्तार और मानव-विकास की अनंत संभावनाओं के प्रति आस्थावान है। चूँकि इस विकास की कोई सीमा नहीं है, इसलिए हमारे वर्तमान ज्ञान के आधार पर इसका कोई पूर्व-निर्धारित लक्ष्य स्वीकार नहीं किया जा सकता। स्वतंत्रता की पहली शर्त वर्तमान बंधनों को तोड़ना है। पिंजरा तोड़ देने पर पंछी खुले आकाश में किधर उड़ेगा- यह तय करने का प्रयत्न निरर्थक है।

2020/10/16 19:3